each: (125 X 2 = 250 Marks)

VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:	Essay	**Test Code:**	1 7 5 6
Name of Candidate	ROSHAN		
Medium Hindi/Eng.	HINDI	**Registration Number**	4 1 4 4 —
Center	ONLINE	**Date**	24 11 21

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

(125 X 2 = 250 Marks)

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

SECTION - A

1 जो लोग अतीत को याद नहीं रख सकते, वो उसे दोहराने के लिए अभिशप्त होते हैं।

"यूनान-रोमा-मिस्र सब मिट गये जहां से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है जहां में गुलिस्तां हमारा"

हिन्दी कवि की ये पंक्तियां निश्चित ही ध्यान आकर्षित करती है जब हम रियो सम्मेलन (1992) के उपरांत पेरिस सम्मेलन पर आम राय नहीं बनते देखते। इसी प्रकार भारतीय सीमाओं पर बार-बार चीन, पाकिस्तान की सैन्य टकराहट को देखते है।

Don't write anything in the margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बार-बार समान प्रकार की घटनाओं को होते देख सहसा मन में प्रश्न उठते हैं कि -

बार-बार समान प्रकार की घटनायें क्यों घटित होती हैं? क्या लोग अपने अतीत को याद करते हुए घटनाओं को दोहराने से नहीं रोक सकते? क्या होता है जब अतीत को भुला दिया जाता है? वे कौनसे तरीके हैं जिनसे हमें इतिहास की पुनरावृत्ति को रोकें?

इस निबंध में हम इन्हीं सभी प्रश्नों का उत्तर खोजते हुए अतीत को याद नहीं रखने और उसे दोहराने के लिए अभिशप्त होने को समझेंगे।

अतीत का तात्पर्य मानव इतिहास, व्यक्तिगत अनुभव, और व्यक्तियों की

(125 X 2 = 250 Marks)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जीवनी, साहित्य तथा फिल्मों, गीतों के माध्यम से याद रखने से संबंधित होता है।

इतिहास केवल 'गड़े मुर्दे उखाड़ना' ही नहीं होता बल्कि इसका प्रयोग हम अनुभव को बढ़ाने, भविष्य और वर्तमान चुनौतियों को रोकने का संकेत पाने के लिए भी कर सकते हैं।

प्रगतिवादी विचारक यशपाल के शब्दों में "मैं इतिहास का प्रयोग वर्तमान समस्याओं के मनन और मंथन के रूप में करके भविष्य के लिए संकेत प्राप्त करने के लिए करता हूँ।"

अब हम देखेंगे कि जो इतिहास को भूल जाते हैं तो वे कैसे इतिहास को दोहराते हैं तथा कैसे लोगों ने इतिहास का सृजनात्मक

उपयोग भी किया है।-

सबसे पहले ऐतिहासिक दृष्टि से देखे तो भारत में पानीपत की तीन लड़ाईयाँ एक ही जगह हुई, हल्दी घाटी युद्ध तथा दिल्ली सल्तनत को प्राप्त करने के लिए खिलजी, तुगलक, मुगलों ने समान युद्ध किये। वहीं गलतियां दोहराई जो पूर्ववर्ति शासकों ने दोहराई।

किंतु ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इतिहास से सीखते हुए दिल्ली की जगह कोलकाता को प्रारंभिक राजधानी बनाया जिसके 200 वर्षों तक उन्होंने सम्पूर्ण भारत पर शासन किया

वैश्विक इतिहास में नेपोलियन की ही तरह हिटलर मुसोलिनी ने एकाधिकार का सपना देखा और उनका परिणाम युद्ध और अशांति रहा। वर्तमान में यही गलती उत्तरी कोरिया के शासक किम जोन उन दोहरा

X 2 = 250 Marks)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रहे है। निश्चित ही भविष्य में उन्हे भी इतिहास दोहराना होगा।

अब यदि राजनीतिक दृष्टि से देखे तो राजनीतिक विचारक कार्ल मार्क्स ने इतिहास की व्याख्या ही ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टि से की है जिसमें शोषक एवं शोषित की सभी कालो में अपने आप को दोहराता रहा है। रूस की क्रांति (1917) में सर्वहारा वर्ग की इसी भेदभाव का परिणाम थी। वर्तमान में चीन और माओवादी इसी इतिहास को दोहरा रहे है। जिसका परिणाम हिंसा ही है।

इतिहास को नहीं दोहराने को रोकने हेतु भारतीय संविधान में आपातकाल उपरांत 42वां तथा 44वां संशोधन किया गया जिसमें अतीत को याद करते हुए व्यापक शक्ति पृथक्करण और शक्ति विकेंद्रीकरण को

सुनिश्चित किया गया है।

वहीं अपने इतिहास से न सीखते हुए म्यांमार में सैन्य शासन लगा तो पाकिस्तान की सेना का दखल वहाँ के राजनीतिक सत्ता पर बना हुआ है।

अब यदि सामाजिक दृष्टि से देखें तो कहा गया है कि -

"कुछ लोग हैं जो वक्त के साँचों में ढल गये
कुछ लोगों ने वक्त के साँचे बदल दिये।"

भारतीय ~~समाज~~ समाज ने सती प्रथा को समाप्त किया, ट्रिपल तलाक को समाप्त किया तथा बाल विवाह जैसी बुराइयों को दूर किया

किंतु दूसरी तरफ अतीत को दोहराने

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की भी गलती की है जिसमें हिंदू-मुस्लिम तनाव स्वतंत्रता के पूर्व से ही चला आ रहा है दिल्ली फरवरी 2020 दंगों और मुजफ्फरनगर दंगों में यह दिखा की हम अतीत से सिख नहीं रहे है।

छुआछूत, अस्पृश्यता, जातिवाद की मनोवृत्ति पुरुषवादी मानसिकता का हावि होने के नकारात्मक परिणामों से हमने सबक नहीं लिया है। बेलछी काण्ड, पर्दा प्रथा, खाप पंचायतों के तुगलकी फरमान इसी कारण इतिहास दोहराने का संकेत हैं।

अब यदि आर्थिक दृष्टि से देखे तो चीन ने अपनी 2/3 जनसंख्या को गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकाला और समावेशी विकास लक्ष्यों और मानव विकास सूचकांकों में अच्छे अंक प्राप्त किया है वहीं भारत

पाँचवी पंचवर्षीय योजना में दिये गरीबी हटाओं, परिवार नियोजन के लक्ष्यों को उस गति से प्राप्त नहीं कर पाया है।

ऑक्सफेम की रिपोर्ट कहती है कि भारत की 1% अमीर जनसंख्या 42.3% सम्पति पर कब्जा किये है वहीं गरीब 50% के पास 4.3% संसाधन ही है। बढ़ती असमानता लैंगिक, सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी विस्थापन को जन्म देता है। अतः हमें अपने इतिहास को नहीं दोहराना चाहिए।

गरीबी किसानों की आत्महत्या और युवाओं की बेरोजगारी से जुड़ी है अतः इस दिशा में भी हमें इतिहास को दोहराने से बचने की कोशिश करनी होगी।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

अब हम राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भी इतिहास को याद नहीं करने और उसे दोहराने को देख सकते हैं। भारत-पाकिस्तान की सीमा पर पाकिस्तान द्वारा हथियार, नशीले पदार्थ, जाली मुद्रा की सप्लाई की जाती है। राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा हेतु हमें अपने इतिहास को याद रखते हुए अपनी सुरक्षा को दुरुस्त करना होगा।

चीन भी डोकलाम, गलवान घाटी जैसी घटनाओं के माध्यम से 1961 की घटना को दोहराने की दिशा में बढ़ रहा है। वह भारतीय माओवादियों को नशा, हथियार, वैचारिक समर्थन भी देकर 1968 की पुनरावृत्ति चाहता है। अतः हमें अपने इतिहास को याद करते हुए हमारी सुरक्षा तैयारियों को अग्रसक्रिय बनाना होगा।

भारत ने भौगोलिक दृष्टि से भी अपने अतीत से सीखा और उड़ीसा तट, तथा पश्चिमी तट पर चक्रवात प्रबंधन ढांचे को विकसित किया जिसका लाभ फॉनि जैसे चक्रवातों से रक्षा में मिला।

दूसरी तरफ पश्चिमी घाट में भूस्खलन की बार-बार आवर्ती, केरल में प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़, चेन्नई की शहरी बाढ़ अतीत को भूल जाने और उसे दोहराने को प्रस्तुत करता है।

विज्ञान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी हमें अतीत को याद रखने की जरूरत है। चेचक, कोविड, स्पेनिश फ्लू, प्लेग जैसी महामारियों ने मनुष्य को अदृश्य भावी बीमारी के लिए जाँच-प्रशिक्षण-स्वास्थ्य सुविधा-आपसी सहयोग को तैयार रहने की प्रेरणा देता है। गावी (GAVI) जैसे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों ने कोविड-19 का मुकाबला करने में काफी मदद की। जिससे लाखों जाने बचाई गई।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमें प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्धों को याद रखते हुए आगे बढ़ना होगा ताकि तीसरे विश्व युद्धों को बढ़ने से रोका जा सके।

अब ही में बर्फ पिघलने से आर्कटिक महासागर को लेकर और स्पेस को लेकर प्रतिस्पर्धी बढ़ी है इसलिए हमें उपनिवेशवाद और शीत युद्ध में हुए स्पेस प्रतिस्पर्धा से सबक लेने होंगे।

व्यक्तिगत जीवन में भी व्यक्ति अपने पुराने अनुभवों से अपना भविष्य सँवार सकता है पुनः वही गलतियां करने से बच सकता है कि जो उसने पहले की है।

ऐसा करके व्यक्ति अपने धन, श्रम, और तनाव को कम कर पायेगा।

अब प्रश्न उठता है कि क्या हमेशा इतिहास को भूलना उसे दोहराना ही होता है? इसका उत्तर है नहीं कई बार इतिहास (अतीत) को भूलना लाभदायक भी होता है।

एक बलात्कार का शिकार शिकार, साम्प्रदायिक दंगों में झुलसी पीड़ित महिला को अगर अपना जीवन अच्छे से जीना है तो उसे अपने कड़े अनुभवों को भूलना ही चाहिए ताकि उसको खुशी प्रेम का आनंद लेने में तकलीफ महसूस न हो।

इसी प्रकार व्यक्ति की एक निश्चित सीमा होती है जिसमें ही वह अपने अतीत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को स्मरण कर जाता है। अतः हमेशा अपने अतीत को याद रखना न जरूरी है और न ही संभव है।

अतः महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं, अनुभवों को याद रखना चाहिए किंतु रचनात्मक, नया करने के लिए अतीत को नये दृष्टिकोण से फिर से देखना होगा। सेब को घटनाओं को देखना होगा। पेड़ से गिरते न्यूटन ने अलग तरीके से देखा तो गैलिलियो ने ब्रह्माण्ड को अलग तरह से आकलित किया जिससे नई खोजे संभव हो पाईं और मानव का भविष्य बदल गया।

इस प्रकार सम्पूर्ण चर्चा का सार हम इस रूप में कर सकते हैं कि अपने अतीत को याद करके हम पुरानी

गलतियों के दोहराव से बच सकते हैं
साथ ही अतीत के सकारात्मक क्षण हमें 5
नई ऊर्जा भी प्रदान करते हैं।

किंतु अतीत के कटु अनुभव
हमारे भविष्य को तनाव में भी डाल सकते
हैं और हम एक बलात्कार पीड़िता के
तरह जीवन को मृत्यु से बुरी स्थिति में
भी ले जा सकते हैं।

इसलिए हमें केवल भविष्य को
सँवारने वाले अतीत की स्मृतियों को
याद रखते हुए भविष्य के लिए संकेत
पाने चाहिए और वर्तमान को समझने
के लिए 'अतीत का रचनात्मक प्रयोग'
करना चाहिए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

SECTION-B

5

"यह पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के मध्य कोई चयन नहीं है; अपितु यह समृद्धि और पतन के मध्य एक चयन है।"

"मनुष्य सभ्यता का इतिहास या तो हरा होगा या होगा ही नहीं"

लॉब ब्राउन की उपरोक्त पंक्तियाँ सहसा मस्तिष्क में कौंध जाती है जब संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण आयोग की वैश्विक जलवायु रिपोर्ट पर नजर जाती है। रिपोर्ट स्पष्ट चेतावनी देती है कि वर्तमान आर्थिक विकास की दिशा पतन की ओर ले जा रही है। यदि पर्यावरण को संरक्षण और समृद्धि की तरफ जाना है तो पर्यावरण का चयन करना होगा न कि अर्थव्यवस्था का।

सर्वप्रथम हम देखेंगे कि कैसे पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के मध्य कोई चयन नहीं है? फिर हम वर्तमान के विकास की दिशा और उससे उत्पन्न प्रभावों को समझेंगे और इससे उत्पन्न समृद्धि और पतन को जानेंगे, निबंध में हम पर्यावरण समृद्धि और अर्थव्यवस्था के मध्यम मार्ग की तलाश की कोशिश करेंगे।

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फंड (UNFCC) की रिपोर्ट अनुसार 21वीं सदी के अन्त तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान 2.5°C से अधिक होगा। साथ ही वर्तमान आर्थिक वृद्धि का यही चलन रहा तो यह पाँचवाँ

'मॉस एक्सटेन्शन' होगा और पहला ऐसा सर्वनाश होगा जो मानव जनित होगा।

वर्तमान में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत से जैविक ईंधन का अधिक दोहन किया गया जिससे मशीनों द्वारा उत्पादन की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला।

इसी प्रवृत्ति ने वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्साइड, मिथेन, सल्फर, नाइट्रस-डाइ-ऑक्साइड की सांद्रता को तीव्रता से बढ़ाया। जिससे व्यापक विनाश का सृजन हुआ और वैश्विक ~~समस्या~~ ग्रीन हाउस इफेक्ट, ओजोन होल और सकारात्मक तापवृद्धि चक्र को गति मिली।

वर्तमान आर्थिक विकास की दिशा प्राकृतिक संसाधनों के अधिकाधिक दोहन पर आधारित है। जिसमें मनुष्य को प्रकृति का एकमात्र उपभोक्ता माना जाता है और निर्बाध प्रकृति का दोहन पर बल दिया जाता है। चाहे वनों की कटाई द्वारा पृथ्वी के फेफड़े कहे जाने वाले अमेजन वर्षा वनों को नष्ट करना हो या फिर समुद्री जैव विविधता का ह्रास।

मनुष्य धातु, पत्थर, हवा, मिट्टी सभी के दोहन को अधिकाधिक उपभोग में लगा रहा है। जिससे मनुष्य की मांग में वृद्धि हुई है और उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है।

यही उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने पृथ्वी

की एक वर्ष में ~~अभी~~ स्वयं की पुनर्भरण क्षमता की जुलाई तक ही उपयोग कर लिया जाता है। अतः मनुष्य की माँग का दबाव पृथ्वी पर अत्यधिक बढ़ा है।

महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा था कि
"पृथ्वी सभी व्यक्तियों की जरूरतों को तो पूरा कर सकती है किंतु किसी के लालच को पूरा नहीं कर सकती।"

इसी प्रकार वर्तमान उपभोग ने कृषिपर दबाव बढ़ा दिया है जिसकारण जैविक उर्वरकों की जगह रसायनिक उर्वरक तथा कीटनाशकों का उपभोग बढ़ा है जिससे मृदा उत्पादकता का ह्रास और नाइट्रोजन प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हुई है।

बढते आर्थिक वृद्धि ने पतन का एक प्रभाव समुद्री जैव विविधता पर भी डाला है। प्लास्टिक प्रदूषण तथा वायुमण्डल में कार्बनडाईऑक्साइड की बढती मात्रा के कारण समुद्री अम्लीयता को बढाया है और इसने समुद्री जैव विविधता को नष्ट किया है प्लास्टिक संक्रमण समुद्री खाद्य जाल में समाविष्ट हुआ है।

पुनः समुद्री प्रदूषण ने समुद्री तथा वैश्विक बाढ और ध्रुवीय बर्फ पिघलने को बढा दिया है जिससे समुद्री तटीय द्वीपीय राष्ट्रों में तटीय बाढ की संभावना बढी है तुवालु, मालदीप तथा बांग्लादेश सर्वाधिक प्रभावित राष्ट्र है।

चक्रवातों, तूफानों की आवृत्ति में वृद्धि, जलवायु जलवायु दशाओं में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परिवर्तन ने खानपान, रहन-सहन संकट और आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया है। भारत विश्व के सर्वाधिक जलवायु सुभेद्य देशों में से एक है।

वर्तमान आर्थिक गतिविधियों ने शहरी विस्तार, मानव गतिविधि वृद्धि को बढ़ावा दिया है जिससे जंगलों का सीमटना, जंगली खाद्य जाल में संकट, मानव-पशु संघर्षों में वृद्धि की है। तेंदुआ, शेर, बाघ, हाथी तथा अन्य जीवों के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हुआ है।

इस प्रकार वर्तमान आर्थिक गतिविधि चयन आर्थिक असमानता को बढ़ाता है और अमीर-गरीब राष्ट्रों मध्य यह असमानता

युद्ध, हिंसा और गरीबी को बढ़ाती है जिससे पर्यावरणीय संसाधनों पर निर्भरता बढ़ती है जो अतिरिक्त पर्यावरण दबाव को जन्म देगा।

इन्हीं कारणों से पर्यावरणविद् मानते हैं कि अर्थव्यवस्था पर दिया गया कोई भी बल पर्यावरण की कीमत पर होता है। आर्थिक गतिविधि मूलतः पर्यावरण पर ही आधारित होती है भले ही वह सतत वृद्धि हो या समावेशी; वह पर्यावरण शोषण और उपभोग को ही बढ़ाती है।

इसका कारण पर्यावरणीय नियमों का ठीक से पालन नहीं करना, और अमीर लोगों द्वारा पर्यावरण संसाधनों का जरूरत से अधिक उपभोग करना है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वहीं दूसरी तरफ यदि पर्यावरण को महत्व दे और मनुष्य अन्य जीवों के समान पर्यावरण के समक्ष स्वयं को अधीनस्थ मानके कार्य करे तो उससे पर्यावरण समृद्धि को बल मिलेगा।

परमाणु हथियारों, परम्परागत हथियारों की जरूरत मनुष्य को नहीं है। उपभोग / सम्पन्नता का पैमाना आर्थिक समृद्धि नहीं बल्कि गुणात्मक वैदिक प्रसन्नता सूचकांक हो तो पर्यावरण की पतन को रोकने में सफलता के साथ किया जा सकता है।

भारतीय वैदिक ग्रंथों में, बुद्ध ने तृष्णा को त्यागने और प्रकृति की समृद्धि में मनुष्य का अस्तित्व रखी

लिए स्वीकार्य क्योंकि यही वास्तविक वृद्धि और जरूरत है।

अब प्रश्न उठता है कि हमारे विकास की वास्तविक दिशा क्या हो क्या पुनः आदिम जीवन जीना विकास की दिशा हो या मनुष्य अन्य मार्ग अपनाये?

निश्चित ही हमें मध्यम मार्ग को अपनाना होगा। पर्यावरण पर मानवीय क्रूर क्रीड़ा का प्रभाव निश्चित ही पड़ता है किंतु हमें मॉन्ट्रियल समझौते (1987) से सीखना होगा। मॉन्ट्रियल ओजोन संरक्षण समझौते ने ओजोन होल को सीमित करने में सफलता प्राप्त की और सम्पूर्ण विश्व को एकीकृत किया।

ऐसे ही हमें COP-26, पेरिस जलवायु

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समझौते की सफलता, कार्बन न्यूट्रल अर्थव्यवस्था, ग्रीन अर्थव्यवस्था तथा चक्रीय अर्थव्यवस्था की दिशा में बढ़ना होगा।

विकसित देशों को चाहिए होगा कि वे जलवायु परिवर्तन में उनकी भूमिका को स्वीकारते हुए क्षतिपूर्ति कोष (GCF) में 100 बिलियन डॉलर प्रतिवर्ष दे और समान किंतु विभेदित उत्तरदायित्वों को निभाते हुए गरीब देशों को तकनीकी मदद भी प्रदान करे।

भारत को अन्तर्राष्ट्रीय सोलर गठबंधन में नेतृत्वकारी भूमिका निभानी होगी और नवीनीकरण ऊर्जा क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्वकर्ता की तरह उभरना होगा।

Don't write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारत को 19.5 करोड़ (WB रिपोर्ट) गरीबों को दो वक्त की रोटी देने की जिम्मेदारी निभाते हुए बहुआयामी गरीबी से भी निपटना है और जीवाश्म ईंधन पर 2030 तक अपनी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के तहत निर्भरता घटानी भी है।

इस प्रकार पर्यावरण और अर्थव्यवस्था दो विरोधी ध्रुव प्रथम दृष्टि में भले ही प्रतीत हो किंतु दोनों के मध्य समन्वय साधा जा सकता है जिससे पर्यावरण के साथ अर्थव्यवस्था या ग्रीन अर्थव्यवस्था से पर्यावरण और अर्थव्यवस्था दोनों की साथ समृद्धि और विकास की प्राप्ति की जा सकती है।